E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

चंदेरी संग्रहालय में संरक्षित विष्णु प्रतिमाएं

श्रीमती आरती शर्मा

शोधार्थी, जीवाजी विश्वविद्यालय

डॉ. जितेन्द्र शर्मा

प्राचार्य, प.श्यामाचरण उपाध्याय महाविद्यालय, मुरैना

Paper Rcevied date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15571036

IMPACT FACTOR 5.924

Abstract

भगवान् विष्णु को अपना प्रधान इष्ट देव और परमात्मा के रूप में मानने वाले भक्त वैष्णव कहे गये तथा इससे सम्बन्धी धर्म–दर्शन और सिद्धांत वैष्णव धर्म के रुप में प्रख्यात हुआ। विष्णु वैदिक देवता हैं जिनका प्रभाव धीरे–धीरे बढ़ता गया। वैष्णव धर्म में विष्णु सम्बन्धी वैदिक सूक्त और आख्यान निहित है। ऋग्वेद में देवताओं के ऐश्वर्य, पराक्रम, विस्तार आदि के अतिरिक्त उपनिषदों के ज्ञान, और सिद्धान्त का भी समावेश इस धर्म में हुआ है।

याज्ञिक कर्मकाण्ड के स्थान –पर भक्ति और उपासना पर विशेंष बल दिया गया। वैष्णव साधक की दृष्टि में यह विशाल विश्व उस ऐश्वर्यशाली विष्णु की ही शक्तियों की अनेकानेक अभिव्यक्ति है। समस्त जगत् उन्हीं की विलक्षण कृति है। उसमें (विष्णु अथवा हरि) और जगत् में कोई भी भेद नहीं है। विष्णु ब्राह्मण त्रिदेवों में से एक हैं और उन्हें ब्रह्मा और शिव की तरह सार्वभौमिक सुरक्षा के लिए जिम्मेदार माना जाता है, जबकि ब्रह्मा को सार्वभौमिक सृजन और शिव को विनाश के लिए जिम्मेदार माना जाता है। विष्णु की वैष्णव संप्रदाय के सर्वोच्च देवता के रूप में उनकी पूजा की जाती है।

वैष्णव धर्म के विकास में योगदान देने वाली विभाव की अवधारणा अवतारवाद का सिद्धांत था। अवतारवाद का सबसे पहला संदर्भ शतपथ ब्राह्मण और तैत्तिरीय संहिता में मिलता है, जहाँ प्रजापत को अलग–अलग समय पर मत्स्य, कूर्म और वराह के रूप में अवतार लेने का श्रेय दिया जाता है। अवतारों की संख्या धीरे–धीरे बढ़ती गई और दस पर मानकीकृत की गई, हालाँकि कुछ ग्रंथों में अलग–अलग अधिक संख्याएँ बताई गई हैं। वराह और अग्निपुराण में दस अवतारों की रूढ़िबद्ध सूची है (1) मत्स्य (2) कूर्म (3) वराह (4) नरसिंह (5) वामन (6) परशुराम (7) राम (8) बलराम (9) बुद्ध (10) कल्कि। इन अवतारों में कृष्ण का नाम नहीं है, क्योंकि कृष्ण स्वयं भगवान् के साक्षात् स्वरूप हैं। विष्णु के अवतारों के विवरण में बलराम को गृहीत कर दस संख्या की पूर्ति की गई है, श्रीकृष्ण विष्णु के ही रूप हैं।

चंदेरी संग्रहालय में प्रदर्शित भगवान विष्णु की प्रतिमाओं का विवरण इस प्रकार है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

वराह अवतार :

सर्वप्रथम ऋग्वेद में वराह रूप का उल्लेख हुआ है।[1] तैत्तिरीय आरण्यक का कथन है कि जल में डूबी हुई पृथ्वी को सौ भुजाओं वाले शूकर ने निकाला।[2] महाभारत में कहा गया है कि संसार का हित करने के लिए विष्णु ने वराह रूप धारण कर हिरण्याक्ष का वध किया।[3] विष्णुधर्मोत्तर् पुराण में वराह की प्रतिमा को अनेक रूपों में बनाने का आदेश दिया गया है। वराह के जो **नृवराह, भूवराह एवं यज्ञ वराह** के रुप वर्णित है पृथ्वी को धारण करने के कार्य में भी वे दो प्रकार से प्रदर्शित किये जा सकते हैं।

1. सम्पूर्ण शरीर मनुष्य की भाँति होता है, मुख केवल वराह की भाँति होता है और वे क्रोध से भरे हुए सभी दानवों के मध्य में स्थित रहते हैं।

2. सम्पूर्ण शरीर वराह के समान होता है। इस रूप का उल्लेख श्रीमद्भागवत तथा विष्णु पुराण में हुआ है। नृवराह दो भुजावाले हैं दोनों हाथों में पृथ्वी को धारण किये रहते हैं और कपिल के समान ध्यानावस्थित मुद्रा में रहते हैं।

नृवराहोऽथवा कार्यौ ध्याने कपिलवत्स्थितः ।

द्विभुजस्त्वथ वा कार्यः पिण्डनिर्वहणोद्यतः ।।

यज्ञ–वराह

पंजीकरण संख्या – ए.एम.सी. 107/2000

सामग्री – सफेद वलुआ प्रस्तर

प्राप्ति स्थान – थूबौन म.प्र.

समय – 9वीं शताब्दी ई.

विवरण – इस वराह रुप में प्रतिमा पर पृथ्वी माता का प्रमाण वराह के जबड़े पर रखी ऊँगलियों से दृष्टव्य है। वराह के शरीर पर पूरे ब्रह्माण्ड को दर्शाया गया है उनके बायें दाँत पर पृथ्वी तथा दाहिने दाँत पर एक देवता का अंकन किया गया है। चार देवताओं को वराह के कानों और आखों के बीच दर्शाया गया है। वराह के शरीर को अलंकृत पट्टियों द्वारा छः भागों में विभाजित किया गया है। सबसे ऊपर 28 दिव्य पुरुषों का चित्रण, अलंकृत पट्टी की पूरी लम्बाई पर किया गया है। इसके नीचे दो पट्टियो के बीच नवग्रह, अष्टवसु, द्वादस आदित्य, सोलह स्त्रियाँ तथा नीचे की दो पट्टियों के बीच वीरभद्र और गणेश युक्त सप्तमातृकाओं, विष्णु के अवतार, पाँच गणेश, दिव्य पुरुष, साधु, अन्धकासुरवध मूर्ति अंकित है। इसके नीचे वाले तल में सत्ताईस दिव्य एक विद्याधर पुरुष को दर्शाया गया है। इसी क्रम में आगे ग्यारह मानवाकृतियों को पुस्तक सहित धार्मिक विमर्श करते हुये दर्शाया गया है। इन चर्चारत धर्माचार्यों के बीच में शिव का अंकन है। सबसे अन्त में पाँच स्त्रियों और एक वीणा धारी पुरुष

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

का अंकन है। ऊपर के तलों में भिन्न, अलंकृत पट्टी वराह के गले के नीचे जुड़ जाती है और एक छल्ला बनाती है। इस छल्ले ऊपर बराह के गले के मध्य में एक पद्मासीन देवता चार विद्यार्थियों के साथ दशाये गये हैं। इसके बांये भाग में एक पुरुष, विद्याधर, महेश्वर, ब्रह्मा, कल्याणसुन्दर मूर्ति तथा दो अन्य आकृतियों का अंकन है। इसके पश्चात् अभयमुद्रा एवं कमण्डल युक्त पाँच दिव्य पुरुष दर्शाये गये हैं।

वराह के पृष्ठ भाग में पूँछ के दोनों ओर पुरुष और स्त्री आकृतियों को अंकित किया गया है। इसके अतिरिक्त कार्तिकेय, नटराज, पार्वती, सुखपुरुष और विद्याधर कमबद्ध दर्शाये गये हैं। इसके पश्चात् स्थानक तथा आसनस्थ पुरुष विद्याधर, उमामहेश्वर, दिव्य पुरुष आदि को दर्शाया गया है। इनके बीच में शैव मुनि, देवी–देवताओं को मनोरम रूप में वर्णित किया गया है। वराह के पृष्ठ भाग के दाहिनी ओर कई विद्याधर और अनेक खड़े तथा बैठे व्यक्तियों का अंकन है।

इस प्रतिमा के पिछले पैर पर स्थानक तथा आसीन मानवाकृतियों का अंकन है, जिसके समीप ही एक बिच्छु की आकृति बनी है। इस प्रतिमा के ऊपर 340 आकृतियों का अंकन तत्कालीन मूर्तिशिल्प एवं मूर्तिकारों के आध्यात्मिक एवं मूर्ति शिल्प के पूर्ण ज्ञान को दर्शाता है।

नृवराह

पंजीकरण संख्या – ए.एम.सी. 836/08

सामग्री – लाल वलुआ प्रस्तर

प्राप्ति स्थान – बूढी चंदेरी म.प्र.

समय – 9वीं–10 वीं शताब्दी ई.

विवरण– संग्रहालय की गैलरी में प्रदर्शित प्रतिमा में चर्तुभुजी वराह को दो स्तम्भों युक्त आले में प्रदर्शित किया गया है। प्रतिमा में देवता को मानव शरीर और वराह के चेहरे के साथ दर्शाया गया है। वराह का मुख, उनके वांयीं कुहनी पर बैठी भूदेवी (पृथ्वी) की ओर दिखाया गया है। प्रतिमा में भूदेवी की प्रतिमा का सिर खंडित अवस्था में है। साथ ही वह जांघों से नीचे की ओर टूटी हुई है। भूदेवी का दाहिना हाथ वराह की थूथन पर रखा गया है। ऊपरी दाहिने हाथ में, वे गदा पकड़े हुए हैं और निचला दायाँ हाथ उनके बगल में लटका हुआ है, जो उनकी जंघा पर है। इस हाथ की हथेली आंशिक रूप से टूटी हुई है। ऊपरी और निचले बाएँ हाथ में क्रमशः चक्र और शंख है। वराह को अपने दाहिने पैर पर खड़ा दिखाया गया है जो कि मजबूती से जमींन पर टिका हुआ है, बायां पैर मुड़ा हुआ है और पद्म पत्थर पर टिका हुआ है। वराह को हार, यज्ञोपवीत, केयूर, कंकन,

मेखला (करधनी) आदि से सजाया गया है। वराह के दोनों ओर दो परिचारिकाएँ अपने हाथों में पुष्प डंठल पकड़े हुए देखी जा सकती हैं।

नृसिंह अवतार :

विष्णु के अवतारों में वराह अवतार के पश्चात् नृसिंह अवतार का उल्लेख आता है। इससे जुडे कथानक विष्णु पुराण में मिलते है। हिरणाकश्यप (हिरण्यकशिपु) का वध करने तथा उससे प्रह्लाद की रक्षा करने के लिए विष्णु ने नृसिंह अवतार लिया था। इस कथा के अनुसार– हिरण्यकशिपु ने ब्रह्मा से यह वरदान माँगा था कि वह ना किसी प्राणी द्वारा,ना देवता अथवा राक्षस द्वारा, ना आकाश में, ना पृथ्वी पर, ना किसी शस्त्र से ना अस्त्र से ना दिन में अथवा ना रात्रि में मारा जाय।[4] इसी कारण विष्णु को यह विचित्र रूप धारण करना पड़ा।

चंदेरी संग्रहालय में नृसिंह की प्रतिमाऐं देखने के लिये मिलती है जिनका विवरण इस प्रकार है–

नृसिंह

पंजीकरण संख्या – ए.एम.सी. 68 / 97

सामग्री – सफेद वलुआ प्रस्तर

प्राप्ति स्थान – बूढी चंदेरी म.प्र.

समय – 10 वीं शताब्दी ई.

विवरण – चंदेरी संग्रहालय में प्रदर्शित इस प्रतिमा को एक स्थापत्य अवशेष पर देखा जा सकता है, जिसमें भगवान विष्णु के नृसिंह अवतार को हिरण्यकशिपु दानव का वध करते हुए प्रदर्शित किया गया है। प्रतिमा एक परिका में दो खाबो के बीच आले में प्रदर्शित की गई है जिसमें विशाल नृसिंह को कक्ष की देहरी एक घुटने के बल बैठे दिखाया गया है उनके घुटनों पर हिरण्यकशिपु को दिखाया है। अपने तीक्ष्ण नाखून से वे उसका पेट फाड़ रहे हैं। प्रतिमा में भयानक रस का बोध होता है, जिसमें नृसिंह की बड़ी–बड़ी आंखें बाहर निकली हुई जीभ बड़ा खुला हुआ मुंह और बड़े–बड़े दांत प्रदर्शित हो रहे हैं। यहां नृसिंह भगवान को दो हाथों के साथ दिखाया गया है। उन्होने अनेक अलंकरण अपनाये हुये है। जिसमें गले में ग्रेबेयक, पीताम्बर, हाथों में कंगन पहने हुए उन्हें प्रदर्शित किया गया है। उनका बायाँ पैर जमीन से थोड़ा ऊपर उठा हुआ है और पत्तियों पर टिका हुआ है। आले के शीर्ष पर एक और छोटा आला है, जिसके अंदर विष्णु की एक छवि है। उन्हें सुखासन में बैठे हुए दिखाया गया है, उनके तीन हाथों मे ंक्रमशः शंख, चक्र और गदा पकड़े हुए हैं और शेष दाहिना हाथ अभय–मुद्रा में है। देवता के सिर के पास विद्याधर माला लेकर उड़ रहे हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

वामन/त्रिविक्रम अवतार :

विष्णु के अवतारों में नृसिंह अवतार के पश्चात् वामन अवतार का उल्लेख मिलता है। वामन रुप की कल्पना बैदिक ग्रंथों के आधार पर हुई है। ऋग्वेद में कहा गया है कि वे एक विशाल युवा पुरुष हैं उन्होंने अपने तीन पगों से संपूर्ण पृथ्वी नाप डाली[5] महाभारत में बामन रूप लेने के कारण वे वामन और तीन पगों से तीनों लोकों को नापने के कारण त्रिविक्रम कहलाए।[6] वामन को मूर्तिकला में दो रुपों में दर्शाया जाता है।

1. वामन रुप
2. त्रिविक्रम रुप

चंदेरी संग्रहालय में वामन रूप और त्रिविक्रम रूप दोनों की प्रतिमा देखने को मिलती है जिनका विवरण इस प्रकार है–

वामन प्रतिमा

पंजीकरण संख्या – ए.एम.सी. 50/97

सामग्री – वलुआ प्रस्तर

प्राप्ति स्थान – बूढी चंदेरी म.प्र.

समय – 10–12 वीं शताब्दी ई.

विवरण – चंदेरी संग्रहालय में प्रदर्शित यह प्रतिमा मंदिर स्थापत्य के अवशेष पर स्थित है। प्रतिमा में वामन को दो खम्बों के बीच चर्तुभुजी रुप में प्रदर्शित किया गया है। वामन के ऊपरी दाहिने हाथ में गदा तथा ऊपरी वायें हाथ में चक्र प्रदर्शित किया गया है। उनका दाहिना निचला हाथ वरद मुद्रा में तथा वायां हाथ खण्डित है। वह कुंडल, हार, यज्ञोपवीत, वनमाला, केयूर, कंकन, आदि जैसे आभूषणों से सुशोभित हैं। उसके घुंघराले बाल हैं और ऊपरी शरीर नग्न है निचला भाग में वे धोती पहने हुये है। माला धारण किये हुए दो उड़ते हुए विद्याधर प्रतिमा के ऊपरी ओर दिखाई पडते है। प्रतिमा में मूर्तिकार ने वामन के कानों को बडा बनाया है, जो देवत्व प्रदर्शित करता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

त्रिविक्रम प्रतिमा

पंजीकरण संख्या – ए.एम.सी. 852 / 08

सामग्री – वलुआ प्रस्तर

प्राप्ति स्थान – बूढी चंदेरी म.प्र.

समय – लगभग 12 वीं शताब्दी ई.

विवरण – चंदेरी संग्रहालय में प्रदर्शित इस प्रतिमा में भगवान (त्रिविक्रम) को आलीढ मुद्रा में दिखाया गया है। भगवान चार भुजाओं वाले हैं, लेकिन प्रतिमा के चारों हाथ खण्डित अवस्था में हैं। पीछे के बाएं हाथ की छाप से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस हाथ में चक्र को पकड़ रखा था। दाहिना हाथ भी अब मौजूद नहीं है। सामने के दाहिने हाथ की हथेली भी थोड़ी टूटी हुई है। उनका दाहिना पैर जमीन पर मजबूती से टिका हुआ है, जबकि बायाँ पैर थोड़ा ऊपर उठा हुआ है जो राक्षस राजा बली के मुँह में प्रवेश करता हुआ दिखाया गया है, बली की प्रतिमा, जिसके दाँत तीखे और आँखें उभरी हुई हैं निचले भाग में दिखाया गया है। भगवान को मुकुट, कुंडल, हार, वनमाला, कंकन, केयूर, यज्ञोपवीत और नुपुर से अलंकृत किया गया है।

चतुर्भजी विष्णु–

पंजीकरण संख्या – ए.एम.सी. 115 / 02

सामग्री – सफेद वलुआ प्रस्तर

प्राप्ति स्थान – राम नगर, गुना म.प्र.

समय – 12 वीं शताब्दी ई.

विवरण– संग्रहालय की गैलरी में अवतार प्रतिमाओं के अतिरिक्त प्रदर्शित प्रतिमा बैष्णव पुराण में वर्णित विष्णु के रुप से मेल खाती है। मूर्ति में चार भुजाओं वाले विष्णु को पद्मासन पर सम्भग मुद्रा में खड़े हुए दर्शाया गया है। किरीट मुकुट युक्त प्रतिमा के चेहरे की विशेषताएं स्पष्ट रूप से नहीं दिखाई देती हैं। क्योंकि प्रतिमा का मुख भाग खण्डित हो गया है, चार हाथों में से केवल एक ही विद्यमान है, शेष तीन कोहनी पर टूटे हुए हैं। प्रतिमा में विद्यमान ऊपरी दाहिना हाथ गदा धारण किए हुए है जबकि निचले दाहिने हाथ की मुद्रा से पता चलता

है कि यह संभवतः अभय—मुद्रा प्रदर्शित करता था। ऊपरी बाएँ हाथ में चक्र प्रदर्शित है और निचले हाथ में कमल है जिसका केवल डंठल प्रतिमा में दिखाई देता है।

सफेद वलुआ प्रस्तर से निर्मित इस प्रतिमा में विष्णु को कुंडल, हार, वनमाला, कंकन, केयूर, यज्ञोपवीत, नुपुर आदि से सुशोभित दिखाया गया हैं। सिर के पीछे एक सजावटी प्रभामंडल दिखाई देता है। इसके ऊपर की ओर लघु आकृतियों का एक पैनल है, जिसके मध्य में एक गरुड़ पर सवार विष्णु को प्रदर्शित किया गया है। मुख्य प्रतिमा के दोनों ओर स्तम्भ पर विष्णु के दस अवतार (दशावतार) उकेरे गए हैं। मत्स्य, वराह, वामन, राम और बुद्ध के चित्र दाईं ओर पाए जाते हैं जबकि कूर्म, नृसिंह, परशुराम, बलराम और कल्कि के चित्र बाईं ओर हैं। स्तम्भ के दाईं ओर चार भुजाओं वाले ब्रह्मा की आकृति उनके साथ है जबकि बाईं ओर शिव और पर्वत को दर्शाया गया है। मुख्य प्रतिमा के पैरों के दोनों ओर तीन परिचारकों की आकृतियाँ हैं, जिसमें एक महिला और उसके दोनों ओर दो पुरुष परिचारक हैं। विष्णु के बाएं पैर के बगल में खड़े परिचारक की पहचान चक्र—पुरुष के रूप में की जा सकती है, जिसके दाहिने हाथ में चक्र है। मूर्ति अच्छी स्थिति में है और संभवतः 10वीं—12वीं शताब्दी ई. की है।

गजेन्द्र मोक्ष प्रतिमा —

पंजीकरण संख्या — ए.एम.सी. 1296 / 98

सामग्री — सफेद वलुआ प्रस्तर

प्राप्ति स्थान — बूढी चंदेरी, गुना म.प्र.

समय — 11—12 वीं शताब्दी ई.

प्रतिमा विवरण — चंदेरी संग्रहालय की दीर्धा में प्रदर्शित दो स्तम्भों के बीच कुलिका में प्रदर्शित की गई है। प्रतिमा लक्षणों के आधार पर यह 11—12वीं शती की प्रतीत होती है। इस प्रतिमा में चर्तुभुजी विष्णु को ग्राह से बचाते हुये दिखाया गया है। यहां विष्णु को गज और ग्राह के बीच पैर रख कर अलग करते हुये दिखया गया है। उनके ऊपरी दांहिने हाथ में चक्र है निचला दांयां हाथ खण्डित है वहीं ऊपरी वांये हाथ से वे गज की सूंड को पकडे हुये है। निचले वांये हाथ में शंख का अंकन है। इस प्रतिमा में विष्णु को चक्र प्रयोग मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। जिसमें ऐसा प्रतीत होता है कि वे चक्र से ग्राह को सिर काट रहे हों।

कथानक के अनुसार द्रविड़ देश में गजेंद्र नामक एक परम प्रतापी राजा राज्य करते थे, उन्होंने अनेक वर्षों तक धर्मपूर्वक राज्य किया, वृद्धवस्था में उन्होंने राज—पाट त्याग दिया और मलय पर्वत पर आश्रम बनाकर तपस्या करने लगे एक बार की बात है,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

महर्षि अगस्त्य शिष्यों सहित गजेंद्र के आश्रम में पधारे उस समय गजेंद्र समाधि में लीन थे, इसलिए उन्हें महर्षि के आगमन का पता नहीं चला अगस्त्य जी ने इसे अपना अपमान समझा और क्रोधित होकर राजा को शाप देते हुए कहा, "दुष्ट! तूने अभिमान में आकर मेरा अपमान किया है, मेरे आने पर भी तू हाथी की भाँति बैठा रहा, मैं तुझे श्राप देता हूँ कि तू गज की योनि में जन्म लेगा"

इसी शाप के कारण राजा गजेंद्र को हाथी की योनि में जन्म लेना पड़ा, लेकिन पुण्यकर्मों के कारण हाथी की योनि में भी उन्हें पूर्वजन्म की स्मृति रही और वे निरंतर भगवान का स्मरण करते रहे। गजेंद्र हाथी अपनी हथनियों के साथ प्रायः सरोवर में स्नान के लिये आता रहता था गजेंद्र बहुत विशाल और शक्तिशाली था। उसे देखकर अन्य पशु डरकर भाग जाते थे एक दिन गजेंद्र अपनी पत्नियों के साथ सरोवर में क्रीड़ा कर रहा था, तभी एक विशाल ग्राह (मगरमच्छ) ने गजेंद्र की टाँग/पैर पकड़ ली और उसे सरोवर के भीतर खींचने लगा, गजेंद्र ने उससे बचने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन असफल रहा अंत में उसने भगवान विष्णु का ध्यान किया और उनसे रक्षा की प्रार्थना की। उसकी करुणामय स्तुति सुनकर भगवान विष्णु उसकी रक्षा करने हेतु वहां नंगे पैर ही भागे चले आए यह देख गजेंद्र ने अपनी सूंड से एक कमल तोड़कर श्रीहरि के चरणों में अर्पित कर दिया। उसके भक्तिभाव से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से उस ग्राह (मगरमच्छ) का अंत करके गजेंद्र की रक्षा की।[7]

छन्दोम येन गरुडेन समुह्यमान
श्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशुयतो गजेन्द्रः ।।
दृष्ट्वा गरुत्मति हरिख उपात्तचक्रम् ।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरिमाहकृच्छ्रात् ।।

हरिहर प्रतिमा –

पंजीकरण संख्या – ए.एम.सी. 951/08

सामग्री – सफेद वलुआ प्रस्तर

प्राप्ति स्थान – बूढी चंदेरी, गुना म.प्र.

समय – 12 वीं शताब्दी ई.

प्रतिमा विवरण – चंदेरी संग्रहालय की दीर्धा में प्रदर्शित प्रतिमा प्रस्तर खण्ड पर दो स्तम्भों के बीच कुलिका में प्रदर्शित की गई है। प्रतिमा लक्षणों के आधार पर यह 12वीं शती की प्रतीत होती है। इस प्रतिमा में विष्णु के हरिहर रुप को प्रदर्शित किया गया है। प्रतिमा का दाहिना भाग शिव तथा वांया भाग विष्णु को प्रदर्शित है प्रतिमा चतुर्भजी है जिसके दायें ऊपरी हाथ में त्रिशूल है। निचला दायां हाथ खाली है ऊपरी वांये हाथ में चक्र तथा निचले

वांये हाथ में शंख प्रदर्शित किया गया है। प्रतिमा के सिर पर आधे दांये तरफ किरीट मुकुट तथा वांये तरफ जटा मुकुट का अंकन है। हरिहर कि दाहिने कान में सर्प कुण्डल तथा वाये कान में मकर कुण्डल है। प्रतिमा में शिव अथवा विष्णु के वाहन का अभाव देखने को मिलता है। परिकर के ऊपरी भाग में दो विद्याघरों को प्रदर्शित किया गया है।

विष्णु का यह रूप वैष्णव तथा शैव सम्प्रदाय में एकता स्थापित करता है। वैष्णव पुराणों में स्थान–स्थान पर विष्णु तथा शिव की एकता का वर्णन मिलता है। विष्णु पुराण में शिव स्वयं अपने श्रीमुख से कहते हैं कि वे हरि का ही अर्धभाग हैं और विष्णु से अलग उनका कोई व्यक्तित्व नहीं है।

वाणासुर की रक्षा करने के बाद कृष्ण ने स्वयं शिव से कहा था–

मत्तोऽविभिन्नमात्मानं द्रष्टुमर्हसि शङ्कर ।।

योऽहं सत्त्वं जगच्चेदं सदेवासुरमानुषम् ।

मत्तो नान्यदशेषं यत्तत्वं ज्ञातुमिहार्हसि ।[8]

अर्थात् आप अपने को हमसे भिन्न न समझें। जो आप हैं वही मैं हूँ।[9]

हरिहर की एकता की ओर श्रीमद्भागवत में भी सङ्केत हुआ है। शिव, विष्णु के मोहिनी रूप को देखने की इच्छा से पार्वती जी के साथ गये। शिव की इच्छा जानकर विष्णु उसी क्षण एक सुन्दर मोहिनी रूप में उनके समक्ष आ गये। उसके हाव–भाव, क्रिया–कलाप तथा सौन्दर्य को देखकर शिव आकृष्ट हो गये और प्रेम से अभिभूत होकर उन्होंने मोहिनी का आलिङ्गन कर लिया।[10] विष्णु की ये प्रतिमायें 11वीं से 13 वीं शदी के वीच निर्मित की गई जव चंदेरी क्षेत्र पर प्रतिहार शासकों की शाखा शासन कर रही थी। प्रतिहार शासकों की बैष्णव भक्ति ने इस क्षेत्र में बैष्णव णर्म की अविरल धारा का विकास किया चंदेरी संग्रहालय में प्रदर्शित ये प्रतिमायें तात्कालिक धार्मिक मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करती है।

संदर्भ सूची –

1. ऋग्वेद, 1/61/7
2. तैतरीय आरण्यक 6/3/5/2
3. महाभारत वनपर्व 126/12
4. श्रीमद्भागवत 7/3/35–36
5. ऋग्वेद, 1/55/5
6. महाभारत अनुशासन पर्व 149/69
7. श्रीमदभागवत 8/3/31–32
8. विष्णु पुराण 5/33/47–48
9. मिश्र इंदुमति, प्रतिमा विज्ञान पृ. 278

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

10. श्रीमदभागवत 8/12/18–29